>

Title: Regarding agitation at major religious centres in the country to protect holy river Ganges from pollution.

योगी आदित्यनाथ (गोरखपुर): महोदय, पवित्र गंगा की अविरलता और निर्मलता के लिए देश के विभिन्न धार्मिक केन्द्रों में कई दिनों से आन्दोलन चल रहे हैं। अगले वर्ष 2013 में प्रयागराज, इलाहाबाद में महाकुंभ का आयोजन भी होने जा रहा है, जिसमें देश और दुनिया से आठ से दस करोड़ श्रद्धालुओं के उपस्थित होकर संगम में पवित्र स्नान करने का अनुमान है। पवित्र गंगा नदी और उसकी सहायक नदियों की वर्तमान दुर्दशा को देखकर प्रत्येक भारतीय का चिन्तित होना स्वाभाविक भी है। एक ओर भारतीय मनीषा ने जल को जीवन का आधार माना, वहीं भौतिक विकास के अंधानुकरण ने आज जीवन के प्रमुख आधार जल को प्रदूषित कर जीव और जगत दोनों के सामने अस्तित्व का गंभीर संकट खड़ा कर दिया है। देश की प्रमुख नदियों गंगा, यमुना आदि हो अथवा इनसे जुड़ी सहायक नदियां हों अथवा प्राकृतिक झील एवं तालाब हों, सभी अनियोजित एवं अवैज्ञानिक विकास की शिकार होकर पूरी तरह प्रदूषित हुई हैं। पवित्र गंगा नदी और यमुना नदी को प्रदूषण से मुक्त करने के लिए 1980 के दशक में गंगा एक्शन प्लान और यमुना एक्शन प्लान बने थे, लेकिन हजारों करोड़ रूपये खर्च होने के बावजूद गंगा पहले से ज्यादा प्रदूषित हुई है। यही स्थिति यमुना नदी के साथ भी है। देश के आम जन-मानस की चिन्ता को ध्यान में रखकर माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में तीन वर्ष पूर्व राष्ट्रीय गंगा नदी बेसिन प्राधिकरण की स्थापना हुई। यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि अब तक प्राधिकरण ने गंगा नदी और उसकी सहायक नदियों को प्रदूषण से मुक्त रखने और उसकी अविरलता और निर्मलता को बनाये रखने के कोई ठोस प्रयास नहीं किये हैं। इससे जनता में भारी आक्रोश है। गंगा नदी तथा उसकी सहायक नदियों के प्रदूषित होने के प्रमुख कारणों में पहला कारण नदियों में बिना पारिस्थितिक अध्ययन किये बगैर बन रही अथवा प्रस्तावित छोटी-बड़ी पन-बिजली बांध परियोजनाएं, दूसरा अपने उद्गम स्थल से लेकर गंगा सागर तक छोटे-बड़े नगरों तथा कस्बों का सीवेज तथा औद्योगिक ईकाइयों का कचरा बिना ट्रीटमेंट के नदियों में गिराना प्रमुख कारण हैं। उपरोक्त दोनों स्थितियां गंगा नदी तथा उसकी सहायक नदियों के अस्तित्व के लिए खतरा पैदा कर रही हैं। एक अनुसंधान के अनुसार पवित्र गंगा नदी में प्रदूषण का स्तर खतरनाक स्तर तक पहुंच गया है। पानी को पीने योग्य होने के लिए उसमें आदर्श रूप से फीकल कोलीफोर्म बिल्कुल नहीं होना चाहिए। नहाने योग्य पानी में 50,000 से कम, खेती योग्य पानी में पाँच लाख से कम होना चाहिए लेकिन वाराणसी में इस समय गंगा नदी में फीकल कॉलिफॉर्म की संख्या 4.9 लाख से लेकर 21 लाख तक है। यह संख्या दर्शाती है कि पानी में नुकसानदायक सूक्ष्म जीवाणु बड़ी संख्या में मौजूद हैं जो विभिन्न रोगों के कारण हैं। यह स्थिति केवल गंगा नदी की ही नहीं है, कमोबेश सभी पवित्र नदियों एवं उनकी सहायक नदियों की यही स्थिति है। नदी केवल हमारे लिए केवल जल का स्रोत मात्र नहीं है, अपितु नदी से हमारा गहरा आत्मीय संबंध है। यह हमारे लिए माँ है, आस्था है, संस्कृति है तथा जीवन और आजीविका का आधार है। आज यह संकट में है जिसके खिलाफ लगातार आंदोलन चल रहे हैं। मैं माननीय प्रधान मंत्री जी से इस संबंध में प्रभावी कदम उठाने, गंगा तथा अन्य नदियों में प्रदूषण पैदा करने या उसकी अविरलता और निर्मलता के खिलाफ षडयंत्र को एक संज्ञेय अपराध घोषित करने, तथा गंगा नदी एवं अन्य नदियों के साथ साथ उनकी सहायक नदियों की अविरलता और निर्मलता को बनाए रखने के लिए ठोस पहल करने की माँग करता हूँ।